

Dr. Kumari Kisan
Department of Home Science
A.L. Hazare College Wazirpur
B. A Part III VIII Paper (Family Relationship).

Discuss the difference between the Joint and Nuclear families.

संयुक्त तथा केन्द्रीय (एककी) परिवार में अंतर

संयुक्त परिवार एवं केन्द्रीय परिवार परिवार के प्रमुख प्रकार हैं। इन दोनों प्रकार के परिवारों की प्रकृति में अच्छी तरह से सामानों में किए उसके संरक्षण, पुनर्वास, परिवार का उद्देश्य तथा आपसी संबंधों में आधार पर इसकी गिनती की जाय होगा आवश्यक है।

संयुक्त परिवार (Joint Family) एककी परिवार (Nuclear Family)

(i) संयुक्त परिवार एकलिंगी आकार के दृष्टिकोण से एक तरह व्यवस्था है। यहाँ की सीढ़ी के सदस्य एक एक साथ एक ही घर में रहते हैं तथा तथा स्वयं में एक संयुक्त देस के रूप में मान्यता देते हैं।

(i) एककी परिवार आकार की दृष्टिकोण में एक सीमित व्यवस्था है, जिसमें पति-पत्नी एवं उनके अविवाहित बच्चे शामिल रहते हैं। ऐसे परिवार में सदस्यों की संख्या चार पाँच से अधिक नहीं होती है।

(ii) संयुक्त परिवार में महिलाओं की स्थिति निम्न होती है। उसका अपना कोई अस्तित्व नहीं होता है। वे प्रायः दूसरे के आधीन रहती हैं।

(ii) एककी परिवार में महिला की स्थिति अच्छी रहती है। दो एक मात्र सामाजिकी के रूप में होती है।

(iii) संयुक्त परिवार में एक मुखिया होता है जो परिवार का विधान करने वाला होता है।

(iii) एककी परिवार में प्रायः पति-पत्नी का स्तर समानता पर आधारित होता है। यहाँ बड़े बच्चे से भी शक्ति की भागीदारी।

(iv) संभ्रत परिवार में सदस्यों का दायित्व आसीमित होता है। प्रत्येक सदस्य अपने सदस्यों की गम्भीरता के लिए उत्तरदायी रहता है। कर्तव्य पूर्ति की सीमा नहीं रहती है।

(v) संभ्रत परिवार में सभी प्रभार की आग एक सत्ता जमा की जाती है। भविष्य में सदस्य परिवार की सम्पत्ति में से अपना हिस्सा अवगत नहीं कर सकता है।

(vi) संभ्रत परिवार में विभिन्न पीढ़ी के अलग-अलग विचारों के लोग रहते हैं। आपसी विचारों में सामंजस्य नहीं होने के कारण पारस्परिक द्वेष, कलह, तनाव, आशाश्रित, संघर्ष आदि होते रहते हैं।

(vii) सामाजिक दायित्व के दृष्टिकोण से संभ्रत परिवार एक निष्क्रिय संस्था है। ऐसे परिवारों में अकेल-मन्यता की प्रधानता रहती है। कारण उसकी सभी आवश्यकताएँ पूरी होती जाती हैं, अतः अधिक लोग ज़रूरत के प्रति उत्तरदायी रहते हैं।

(viii) संभ्रत परिवार का सदस्य जीवन भर उसी सदस्यों के साथ ही रहता रहता है। उसी परिवार में जन्म होता है, विवाह के बाद उसी लोगों के मध्य रह कर लक्ष्यों की परवरिश करते हैं।

(ix) एकल परिवार में सदस्यों की संख्या कम होने के कारण दायित्व भी कम रहता है। लक्ष्यों के विवाह के बाद उसका लोग-मो-बाप पर नहीं रहता है।

(x) एकल परिवार में सम्पत्ति का रूप व्यक्तिगत होता है। व्यक्ति से किसी प्रभार लगाने या वचन कर सकता है। कसूरनी बाप से भी सम्पत्ति सम्पत्ति का उपयोग वह अपने हिसाब से कर सकता है।

(xi) दोल परिवार होने के कारण पारस्परिक स्नेह, प्रेम की भावना ज्वाला रहती है। अपने विचारों के अनुभवों के द्वारा वे लोग एक-दूसरे की सहायता करते हैं।

(xii) एकल परिवार के सदस्य उसकी तरफ से बँधी न रहकर परिवर्तनशील रहते हैं। प्राण जन्म लेने के जन्म देने का परिवार तथा स्वभाव एक-दूसरे से अलग रहता है।

(xiii) एकल परिवार के सदस्य उसकी तरफ से बँधी न रहकर परिवर्तनशील रहते हैं। प्राण जन्म लेने के जन्म देने का परिवार तथा स्वभाव एक-दूसरे से अलग रहता है।

(ix) संयुक्त परिवार ऐतिहासिक दृष्टी-
कोण से भारत में एक प्राथमिक-
प्राचीन संस्था मानी जाती है।

(x) संयुक्त परिवार पौरुष श्रम पर
एक स्थापित रहने है इस श्रम से
वै जाग-धार्मिक एवं शान्तात्मक
रूप से जुड़े रहते हैं। श्रम
व्यवस्था के प्रति उत्साहित रहते हैं।
ऐसे परिवार स्वाधीन प्रकार के
होते हैं-

(xi) संयुक्त परिवार की व्यवस्था इस
प्रकार की होती है कि प्रत्येक सदस्य
सामाजिक, आर्थिक एवं आध्यात्मिक
दृष्टिकोण से आपसे आप के
सुरक्षित अनुभव करता है। किसी
प्रकार बीमारी, दुर्घटना के समय
परिवार के अन्य लोगों से
सहायता मिलती है।

(xii) संयुक्त परिवार के सामाजिक
कृतियों को प्रोत्साहन एवं कृतियों
का केंद्र माना जाता है। लक्ष्य-
विवाह, विधवा विवाह निर्धन-
आदि संयुक्त परिवार की ही है।

(ix) स्वामी परिवार पुनर्जीकरण तथा
नारीकरण और पेशान की देन है।

(x) स्वामी परिवार में स्वाधीनता
संरक्षित होती है। परिवार के सदस्यों के कारण
श्रम परिवर्तन में परेशानी नहीं होती है।
जहां नौकरी आच्छा मिली। वहां पूरे परिवार
के साथ जाता जा सकता है।

(xi) स्वामी परिवार में व्यक्ति की स्वतंत्रता
आपनी शक्ति तथा साधनों पर निर्भर
रहना पड़ता है। किसी प्रकार दुर्घटना, बीमारी
के पक्ष व्यक्ति को असह्य हो जाता है। ऐसे
में वह अपने मित्रों अन्य सामाजिक संस्थाओं
की सहायता में जाता है।

(xii) स्वामी परिवार का वास्तविक
उद्देश्य स्वाधीनता तथा पुनर्जागरण से
पूर एवं आधुनिकता में परिवर्तन होता
है।